Vidya Bhawan, Balika Vidyapith
Shakti Utthan Ashram, Lakhisarai-811311(Bihar)

Class - XI
Subject - Music

Subject Teacher - Partha Sarkar

खयाल

ख्याल (Khyal)

It is accepted at present as the highest form of classical art in North India. It allows melodic variation and improvisation within the framework of a Raga and is more free and floury compared to Dhrupad.

ख्याल फ़ारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है कल्पना। गीत के इस प्रकार में गायक को विशेष महत्त्व दिए जाने के कारण शास्त्रकारों ने इसे ख्याल की संज्ञा दी। ख्याल की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है :

''गीत का वह प्रकार जिसमें आलाप, तान, खटका, कण आदि विभिन्न अलंकारों द्वारा किसी विशिष्ट राग में उसके नियमों का पालन करते हुए भावों को प्रकट करते हैं, ख्याल कहलाता है।''

ख्याल में स्वरों की सफाई और गले की तैयारी पर विशेष बल दिया जाता है। इसमें गायक गमक का प्रयोग (जो ध्रुपद-धमार का अंग है) कम करते हैं। इसमें स्वर-सौंदर्यता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। ख्याल गायन में श्रृंगार रस की प्रधानता होती है।

ख्याल के दो प्रकार होते हैं : 1. विलंबित ख्याल, 2. द्रुत ख्याल

1. विलंबित ख्याल

जब ख्याल धीमी या विलंबित लय में गाया जाता है तो उसे विलंबित ख्याल कहते हैं। इस गायकी के साथ तबले का प्रयोग होता है। अत: एक ताल, झप ताल, तिलवाड़ा ताल तथा चार ताल आदि का इस ख्याल गायकी के साथ प्रयोग किया जाता है।

2. द्रुत ख्याल

यह द्रुत गति में गाया जाने वाला गीत है। इसे छोटा ख्याल भी कहा जाता है। इसके केवल दो भाग होते हैं : (1) स्थायी, (2) अंतरा।

यह ख्याल गायकी अधिकतर द्रुत एक ताल तीन ताल, झप ताल, रूपक ताल आदि के साथ गायी जाती है। बड़े और छोटे ख्याल में प्रकृति और लय का अंतर होता है। द्रुत ख्याल की प्रकृति चपल एवं विलंबित ख्याल की प्रकृति गंभीर होती है।